29/07/20

Philosophy.

Paper VIII

Ajeet Kumar
Assistant professor, C.M.S
College.

Prayer and bhakti

धर्म के स्वरूप की व्याख्या करते हुए प्रथम अध्याय में हम बता चुके हैं कि किसी अलौकिक अतिप्राकृतिक या दैवी शक्ति अथवा सत्ता में मनुष्य का विश्वास धर्म का मूल आधार तथा अनिवार्य तत्व है। वस्तुतः धर्म का यही तत्व उसे दर्शन और विज्ञान दोनों से पृथक करता है जिनका मुख्य आधार न होकर तर्कबुद्धि है। दार्शनिक तथा वैज्ञानिक के विपरीत धर्मपरायण व्यक्ति के प्रति अटल आस्था श्रद्धा का सर्वोपरि स्थान होता है यही आस्था या धर्मपरायण व्यक्ति के मन में प्रार्थना पूजा अथवा उपासना को जन्म देती है जो धर्म का अनिवार्य अंग है और जिसके माध्यम से धार्मिक अनुभूति की चरम अभिव्यक्ति होती है।

भक्ति

भक्ति का जो चेतना के स्तरों में मुख्य की भक्तियों में उपस्थित है प्रतीक है सामग्री में रिशेष्मि है और एक होगा इस भी अनेक का आकृष्ट कर्म सम्प्रदाय तथा भक्तों की आवश्यकताओं को पूर्ण करनेवाला है,

मानव चिरकाल से इस एक अनादि सत्ता (ब्रह्म) में विश्वास करता आया है। भक्ति साधन तथा साध्य द्विविध है। साधक साधन में ही लग जाता है, यही साधन का साध्य बन जाता है। पर प्रत्येक साधन का अपना पृथक फल भी है। भक्ति साधक को पूर्ण स्वाधीनता पवित्रता एकरसभावना तथा प्रभु-प्राप्ति संदेश प्रदान करती है और वह सत्य-मय के प्रभु में अवलम्बित होकर आनन्द का उपभोग करता है।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं जिस प्रकार अग्नि के पास जाकर शीत की निवृत्ति का अनुभव होता है उसी प्रकार प्रभु के पास आनन्द प्राप्त होता है।